स्थानीय सम्पर्क :-



# बाल संदेश

(बच्चों को उनके जीवन निर्माण हेतु मार्गदर्शन)

लेखक

**स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक**

संपादक

**डॉ. राधावल्लभ**


प्रकाशक

**दर्शन योग महाविद्यालय**

आर्यवन, रोजड़

**प्रकाशन तिथि** : अक्टूबर 2016
**मूल्य** : 10/- रू
**लेखक** : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
संपादक : डॉ. राधावल्लभ

**प्रकाशक** : **दर्शन योग महाविद्यालय**
आर्यवन, रोजड़, पत्रा., सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकांठा (गुजरात) 383307
दूरभाष : (02770) 287418, 287418
चलभाष : 94094 14011, 9409415017
**Email :** darshanyog@gmail.com
**Website :** www.darshanyog.org
**Youtube/Facebook/skype :** darshanyog

**मुद्रक : यश प्रिन्टर्स, नारोल, अहमदाबाद**

## प्राक्कथन

पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक द्वारा बच्चों और युवाओं को स्वस्थ, बलवान, बुद्धिमान और चरित्रवान बनाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस लघु पुस्तिका की रचना की है। जिसमें विद्यार्थियों की दिनचर्या और व्यवहार संबंधी बिन्दुओं पर पर्याप्त मार्गदर्शन किया है।

स्वामी जी महाराज अनेक वर्षों से देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार, शंका समाधान और दर्शनों का पठन-पाठन करते रहे हैं। उनके अनुभवों के सार रूप में यह पुस्तक बालकों और युवा वर्ग के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

जो बालक और युवा पुस्तक में उल्लिखित दिनचर्या और आचरण संबंधी नियमों का पालन

करेंगे वे जीवन में सुख-शांति, सफलता, स्वास्थ्य और दीर्घायु को प्राप्त करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मैं आप सभी पाठकवृन्द से यह अनुरोध करता हूँ कि इस पुस्तक का वितरण अपने आसपास के विद्यालयों और अपने परिचितों में अधिक से अधिक करें, जिससे की हमारे देश का आने वाला कल सुदृढ़ और संस्कारित होने में सहायता मिल सके।

दि. 05/11/2016


**जितेन्द्र भाटिया,**

अध्यक्ष, सर्वे भवन्तु सुखिनः ट्रस्ट,

पता - ए-22, आर्य नगर अपार्टमेन्ट,

आई.पी. एक्सटेंशन, पठपढ़गंज, दिल्ली 92

मोबाइल न. : 09811322155


## बाल संदेश

- स्वास्थ्य और दीर्घ आयु की प्राप्ति के लिए सूर्योदय से पहले उठ जाना चाहिए।
- मंजन करके शौच (मल त्याग) से पहले पर्याप्त जल पीना (उष:पान करना) चाहिए।
- प्रात:काल सूर्य उदय के पहले और सायंकाल मल-त्याग (शौच) करना स्वास्थ्यप्रद होता है।
- साफ-सुथरे, सुन्दर स्थान पर सुबह घूमना (भ्रमण) आयु, बल और स्वास्थ्य को बढ़ाता है।
- प्रतिदिन सूर्योदय के पूर्व स्नान करना शारीरिक बल, स्वास्थ्य, आयु, स्वच्छता, फुर्ति और शांति को बढ़ाता है।

- प्रतिदिन शुद्ध शांत स्थान में सन्ध्या (ईश्वर का ध्यान) करने से मन की पवित्रता, शांति, एकाग्रता, बुद्धि और यश की वृद्धि होती है।
- विधिपूर्वक प्राणायाम करने से शरीर का विकास, मन की एकाग्रता, रक्त की शुद्धि होती है और इन्द्रियों की चंचलता समाप्त होती है।
- व्यायाम करने से शरीर में हल्कापन, मजबूती, सुडोलता, कार्य करने का सामर्थ्य, पाचनशक्ति की वृद्धि, शारीरिक बाधाओं को सहन करने की शक्ति, कांति और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।
- तम्बाकू, गुटखा, शराब, सिगरेट, बीड़ी, चाय, कॉफी, मांस, मछली, अण्डे, मिर्च, कोल्ड्रिंक का सेवन शारीरिक-मानसिक शक्ति को क्षीण करता है।



- अपनी योग्यता के अनुरूप अपनी पढ़ाई के साथ-साथ प्रामाणिक धार्मिक ग्रंथों जैसे, वेद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, सत्यार्थ प्रकाश आदि का स्वाध्याय प्रतिदिन कर अपने ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए।
- सिगरेट, शराब आदि दुर्व्यसनों में फसकर छूटने के लिए वैसे ही तड़पते हैं, जैसे रोटी खाने के लोभ में पिंजरे में फंसकर चूहा, छूटने के लिए तड़पता है।
- जैसे मछली आटा खाने के लोभ में, कांटे में फंस जाती है, वैसे ही कोई भी व्यक्ति रूप, रस, गंध आदि विषयों में फंस जाता है। विषयों के आकर्षण से बचें।

- सात्विक भोजन भी थोड़ी मात्रा में करना चाहिए। ठूंस-ठूंस के खाने से आलस्य आता है, आयु घटती है, मोटापा बढ़ता है।
- जब भूख लगी हो और भोजन का समय हो गया, तब सात्विक भोजन करें। हर समय बकरी की तरह मुंह चलाते रहना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।
- भोजन को खूब चबा-चबा कर खाना चाहिए ताकि पेट को उसे पचाने के लिए कम से कम मेहनत करनी पड़े।
- भोजन के बाद कुल्ला करके मुंह को अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए, इससे दांत खराब नहीं होते और मुंह से बदबू नहीं आती।



- बुरे बालक की पहचान- बात-बात में गुस्सा करना, झूठ बोलना, माता-पिता, गुरुजनों के अनुशासन में न रहना, गुटखा मसाला खाते रहना, चाल-ढाल पहनावा बदमाशों की तरह रखना।
- अच्छे बालक की पहचान- नजर नीची रखना, मीठा बोलना, सभ्यता से बोलना, सत्य बोलना, बड़ों का आदर करना, अनुशासन में रहना, साफ सुथरा रहना आदि।
- बचपन से ही बच्चे यदि भौतिक सुविधाओं, नौकरों आदि का अधिक प्रयोग करेंगे, तो निश्चित रूप से उनकी शक्ति घट जायेगी। अपने को स्वावलंबी बनायें।

- बाल्यावस्था में लापरवाही करने से चरित्र सदा के लिए अशुद्ध हो जाता है। उसे वापिस ठीक करना बहुत ही कठिन होता है।
- बालकों को चाहिए कि वे अपने चरित्र को शुद्ध और उत्तम बनाने के लिए अपने माता पिता और गुरुजनों के निर्देश का श्रद्धापूर्वक पालन करें।
- उन बच्चों की शक्ति बढ़ती है, जो बच्चे मेहनती होते हैं। जैसे बाग-बगीचे में खुला स्वतंत्र उड़ने वाला तोता।
- उन बच्चों की शक्ति घट जाती है, जो आलसी होते हैं। जैसे पिंजरे में कैद तोता। स्वयं को आलस्य आदि दोषों से बचायें।



- दूसरों से चीजें न मांगे, अपनी चीजों का ही प्रयोग करें। यदि कभी आपत्तिकाल में मांगनी भी पड़ जाये, तो वस्तु को तोड़फोड़ या बिगाड़कर वापिस न देवें।
- कुछ शिष्टाचार की बातें- छड़ी या छत्री हिलाते हुए सड़क पर चलना अच्छा नहीं है। चलते-चलते बीच सड़क में ही खड़े होकर बातें करना अच्छा नहीं है।
- यदि कोई कहे, कि इस पृथ्वी ने कुछ चाल तेज कर दी, और सूर्य चक्कर 320 दिन में ही पूरा हो गया तो आप उसे मूर्ख कहेंगे। इससे सिद्ध हुआ, कि स्कूल में बच्चे सत्य की खोज करने जाते हैं, नौकरी ढूंढने नहीं।

- जिधर चलें, उधर ही देखें। बिना कारण बार बार दायें-बायें देखने से किसी दूसरे व्यक्ति या किसी मोटर गाड़ी से टकरा सकते हैं।
- स्कूल में विद्या पढ़ने का मुख्य उद्देश्य धन कमाना, सत्ता प्राप्त करना, मौज मस्ती करना आदि नहीं होना चाहिए। बल्कि ज्ञान की वृद्धि करके, दुःख दूर करना तथा आनंद की प्राप्ति करना होना चाहिए।
- बचपन से दूसरों की गालियां सुनते-सुनते, गाली देने की आदत बन सकती है। इसीलिए बोलने में सदा सावधान रहें, और अच्छे शब्दों का ही प्रयोग करें।
- विद्यालय में केवल अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के लिए न जायें। सच्ची विद्या की प्राप्ति और चरित्र सुधार के लिए जायें।
- विद्यार्थी लोग मन की एकाग्रता और इन्द्रियों पर संयम रखें, तभी सच्ची विद्या की प्राप्ति और चरित्र की उन्नति कर पाएंगे। सिर्फ खाने-पीने में ही रुचि न रखें।
- जो बच्चे आधा घंटा पहले घर से भरपेट भोजन करके चले थे, और स्कूल आते ही मिठाई खाने लगे, वे उत्तम चरित्रवान और संयमी कैसे कहलाएंगे।
- सुबह उठकर और रात को सोने से पहले हर रोज अपने माता-पिता को पांव छूकर नमस्ते किया करें।

- स्कूल केवल विद्याप्राप्ति का ही स्थान नहीं है, बल्कि तपस्या का भी स्थान है। अपनी फालतू इच्छाओं का दमन करना बड़ी भारी तपस्या है।
- माता–पिता के साथ बोलते समय सभ्यता पूर्वक बोलें। उनके साथ तू या तुम शब्द से बात न करें, बल्कि आप शब्द से बात करें।
- स्कूल में किसी बच्चे की वस्तु–पैन, रबड़, पुस्तक आदि यदि कहीं पर गिरी हुई मिल जाये, तो उसे स्कूल के कार्यालय में जमा करा देवें।
- दूसरों के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करें, किसी का मजाक न उड़ायें। अपना व्यवहार सुन्दर बनायें।



- आत्म गौरव बनाये रखें, भिखारियों जैसे वर्ताव न करें। परन्तु किसी के साथ बिना कारण घृणा या हीनता का व्यवहार भी न करें।
- माता–पिता का सच्चा सम्मान तो तब कर पाएंगे, जब आप अपने माता–पिता को दुखी नहीं करें। नमस्ते आदि तो सम्मान के बाह्य चिन्ह हैं।
- अपनी पुस्तकें फाड़ देना, या पैन, पैंसिल खो देना, यह अपने माता–पिता के साथ अन्याय है। क्योंकि कितनी मेहनत से धन कमाकर वे आप को पढ़ाते हैं।
- माता–पिता की आय कम है, स्कूलों का खर्च बढ़ता जाता है। बच्चे लापरवाही से वस्तुएं नष्ट करके माता–पिता का खर्च न बढ़ायें।

- जो व्यक्ति नियमित जीवन जीता है, वह स्वस्थ होकर लम्बी उम्र तक जीता है। उसका सोना, जागना, व्यायाम, उपासना, भोजन आदि सारे काम स्वाभाविक रूप से समय पर होने लगते हैं।
- स्वास्थ्य की रक्षा और पूरी शक्ति प्राप्त करने के लिए कम से कम एक दिन में छः सात घंटे सोना चाहिए। रात को जल्दी 10 बजे सोयें और सुबह जल्दी 4-5 बजे उठें।
- किसी काम को यदि आज ही कर सकते हों, तो उसे कल पर मत टालिए।
- अनियमित जीवन जीने वाले लोग प्रायः रोग आदि से ग्रस्त होकर, छोटी उम्र में ही अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं।



- व्यायाम के लिए अवश्य समय निकालें। जिनका काम पढ़ने लिखने और दिन भर बैठे रहने का हो, वे व्यायाम के लिए कुछ अधिक समय निकालें।
- कोई भी काम करते समय मन की एकाग्रता पूरी रहनी चाहिए। पहले एक काम को पूरा कर लिया जाये, तब दूसरा शुरु किया जाये, अन्यथा काम बिगड़ेंगे।
- अपने पढ़ाई आदि कार्य को प्रसन्नता से करें, तो पढ़ाई का काम भी, कठिन नहीं लगेगा। जैसे माताएं गीत गाते गाते, चक्की पीसती थीं, तो वह कठिन काम भी आसानी से हो जाता था।

- किसी काम को भूलना नहीं चाहिए। एक नौकर को बाजार से दवाई लाने को कहा। वह भूल गया। याद आने पर, जब वह दवाई लेकर पहुंचा, तब तक उसका मालिक मर चुका था।
- जिसको जो समय दिया हो, उस समय पर उससे अवश्य मिलना चाहिए। समय देकर न मिलना या समय का पालन न करना भी झूठ है।
- जब सुबह या दिन में पहली बार आपस में मिले, तो एक दूसरे का नमस्ते जी कहकर सम्मान करें। वेदों में इसी शब्द का प्रयोग बतलाया है।
- बचपन में किए कार्य- खेलकूद, पढ़ाई आदि जवानी की तैयारी। जवानी में किया कार्य- धन कमाना आदि बुढ़ापे की तैयारी है।



- बच्चे और बड़े सभी लोग स्त्रियों का सम्मान करें। उनको माता बहिन की दृष्टि से देखें। इससे सबका चरित्र अच्छा बनेगा और सबकी सुरक्षा होगी।
- पाठशाला युद्धक्षेत्र है। यहां पर विद्या और अविद्या में लड़ाई होती है। जो बालक यहां पर जीत जाता है, वह जीवन में सब जगह जीत जाता है।
- जो बच्चे समय पर स्कूल जाएंगे, नियमित पाठ पढ़ेंगे, अनुशासन में रहेंगे, खेलकूद में न्याय से व्यवहार करेंगे, वे सदाचारी, संयमी, सुखी बनेंगे और दूसरों को भी सुख देंगे।
- यदि आप सत्संग आदि में जायें तो कॉपी में उसकी कुछ महत्तवपूर्ण बातें अवश्य लिखें।

- विचारों का प्रभाव, चेहरे की सुन्दरता के प्रभाव से अधिक बलवान होता है। चेहरे की अपेक्षा, विचारों को अधिक सुन्दर बनायें।
- किसी को स्पष्ट मना कर देना, अधिक अच्छा है, उसे झूठा दिलासा देने से। ताकि वह अपना कोई और प्रबंध कर सके।
- बचपन में स्कूल में सब तरह के बच्चे इकठ्ठे पढ़ते हैं, खेलते कूदते, हारते जीतते हैं। यह सब भविष्य में साथ मिलकर रहने की तैयारी है।
- बचपन, जवानी की तैयारी है। जवानी, बुढ़ापे की, और बुढ़ापा अगले जन्म की तैयारी है। अगले जन्म की तैयारी भी करें, जिससे अगला जन्म अच्छा मिले।



- जिस शरीर की नियमित व्यायाम, स्नान, भोजन आदि से रक्षा की जाती है, वह जल्दी नहीं बिगड़ता। जैसे किसी कार की नियमित रूप से सफाई धुलाई की जाती है, तो वह जल्दी नहीं बिगड़ती।
- अच्छी स्मृति के लिए एक कारण है ताजगी। सुबह शीघ्र उठने पर शरीर में ताजगी रहती है। इसलिए सुबह का पाठ जल्दी स्मरण होता है। विद्यार्थी सुबह अवश्य पढ़ें।
- अपनी ऐसी योग्यता बनायें कि आगे अपनी मेहनत से कमा कर खायें। बिना मेहनत के हीरे, मोती भी मिलें, तो न लेवें । वे आपको सुख नहीं, दुख ही देंगे।

- अपना टाइम टेबल 24 घंटे का बनाये। सब काम पूरे हो जाएंगे, और फिर भी समय बचेगा।
- यदि आपका सोने, उठने, खाने, पीने, व्यायाम, कार्य व्यवसाय आदि का समय निश्चित नहीं है, तो आप लंबा नहीं जी पायेंगे।
- किसी विषय को पहले समझकर, और बाद में दस बार दोहराने से भी स्मृति अच्छी बनती है। बिना समझे, केवल रट्टा मारने से नहीं।
- जीवन में उन्नति करने के लिए, प्रतिदिन रात में सोने से पहले अपनी दिनभर के कार्यों को डायरी में लिख लीजिए। यह डायरी आपका पथ प्रदर्शन करेगी, आपका उत्साह बढ़ाएगी, आपकी गलतियों का संकेत करेगी।



## दर्शन योग महाविद्यालय
## ( वैदिक दर्शन अध्ययन एवं योग प्रशिक्षण का आदर्श संस्थान )

**प्रवृत्तियाँ :-**

1. धार्मिक, योगाभ्यासी, वैदिक, दार्शनिक युवा विद्वानों का निर्माण।
2. विभिन्न शिविर :- क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर, सरल आध्यात्मिक शिविर, ध्यान योग शिविर, सघन साधना शिविर, सफलता विज्ञान शिविर, किशोर चरित्र निर्माण शिविर, सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व विकास शिविर, आत्मोत्थान जागृति शिविर आदि।
3. विभिन्न परिसंवाद, प्रवचनमाला व शंका समाधान: विषय: संतान निर्माण, गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएँ? कर्मफल सिद्धान्त, तनाव से मुक्ति, ईश्वर का स्वरूप, वेद कथा, मनुस्मृति, दर्शन शास्त्र, उपनिषद आदि शास्त्रों का अध्ययन आदि।

4. साहित्य प्रकाशन एवं वितरण :- वैदिक, आध्यात्मिक साहित्य पुस्तक, पोस्टर, शुभकामना संदेश, सी. डी., सुविचार कलेण्डर आदि का लेखन प्रकाशन तथा निःशुल्क या लागत मूल्य पर वितरण।
5. वार्षिक उत्सव प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल-1 (मार्च/अप्रैल)।
6. दैनिक यज्ञ और यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन, पर्यावरण शुद्धि, औषधि व वनस्पति/वृक्षारोपण करना व अन्यों को प्रेरित करना।
7. संन्यास, वानप्रस्थ दीक्षा आदि वैदिक संस्कारों का आयोजन। 8. नि.शुल्क अन्त्येष्टि संस्कार।
9. इंटरनैट, वैबसाईट, फेसबुक व व्हाट्स एप आदि के माध्यम से प्रेरणा तथा आध्यात्मिक व व्यावहारिक शंकाओं का समाधान।
10. गौवंश संवर्धन हेतु प्रचार तथा सहयोग, निर्धन विकलांग रोगियों को और प्राकृतिक प्रकोपों में सहायता प्रदान करना।



## दर्शन योग महाविद्यालय की एक अभिनव परियोजना "सफलता विज्ञान"

भारत को विश्वगुरु बनाने वाली हमारी महान गौरवशाली संस्कृति की सफलता प्रदायक विचारधारा सर्वश्रेष्ठ है। मानवमात्र की भलाई के लिए इस विचारधारा को जन साधारण तक पहुँचाना अनिवार्य है। इसी दृष्टिकोण से दर्शन योग महाविद्यालय के द्वारा इस कल्याणकारी विचारधारा को सरल-सुबोध भाषा और नवीनतम-आधुनिक मनोरंजक शैली में प्रस्तुत करने के लिए अभिनव परियोजना 'सफलता विज्ञान' का संचालन किया जा रहा है। इस आशा के साथ कि, ज्ञान को सहज-सुलभ बना कर, उसे घर-घर पहुँचाने वाली यह हमारी पारम्परिक पद्धति, आमजन के अन्दर जीवन का उद्धार करने वाले गुणों का विकास करने में सहायक सिद्ध होगी।

अतः महाविद्यालय के निदेशक और आचार्य की प्रेरणा, मार्गदर्शन व निर्देशन में महाविद्यालय के सेवा एवं साहित्य प्रचार विभाग द्वारा पढ़ाई-नौकरी, व्यापार-साधना आदि जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में सफल बनाने वाले वास्तविक-व्यावहारिक विधि-विधानों का पथ-प्रदर्शन करने वाली इस वैचारिक परियोजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस वृहत् परियोजना में अनेक विभाग हैं, यथा :-

1. सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला ( **Series** ) - जनसामान्य के बौद्धिक स्तर के दृष्टिगत रची गईं 'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला' की 20 से अधिक बहुरंगी आकर्षक पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है। जिसके तहत प्रथम पुस्तक 'सफलता का संसार' प्रकाशित हो चुकी है, शेष पुस्तकें क्रमशः प्रकाशित होना बाकी हैं।

2. सफलता विज्ञान सुविचार पुस्तक ( **Motivational Quotation Book** ) शृंखला - निःसंदेह, हृदयंगम किए गए सुविचार ही, कामना-कर्म-कामयाबी के रूप में बदल कर स्वयं का उद्धार करा दिया करते हैं। इसी वास्तविकता के दृष्टिगत 'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला' की प्रथम पुस्तक 'सफलता का संसार' आधारित, प्रथम बहुरंगी सुविचार पुस्तिका 'सफलता सुविचार' प्रकाशित हो चुकी है। शृंखला की शेष सुविचार पुस्तिकाएं प्रकाशित होना बाकी हैं।

3. सफलता विज्ञान चित्र प्रदर्शनी ( **Poster Exhibition** ) शृंखला - पुस्तक शृंखला के प्रेरक तथ्यों को छोटे व बड़े लगभग 2000 की संख्या में 'पोस्टर' के रूप में प्रकाशित करना प्रस्तावित है। फलतः सेवाभावी जन अपने घर व ऑफिस में इन प्रेरक छोटे और स्कूल-कॉलेज-कोचिंग आदि संस्थाओं में बड़े पोस्टर्स की प्रदर्शनी स्वयं आयोजित कर सकेंगे। प्रदर्शनी के आयोजन के फलस्वरूप, लोग सफलता के मार्ग को जानकर, न केवल स्वयं सफलता की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे बल्कि अन्यों को भी बढ़ा सकने में सहयोगी बन सकेंगे। इसके अतिरिक्त, आमजन की सुविधा हेतु पोस्टर लागत व्यय पर उपलब्ध कराना भी प्रस्तावित है।

वर्तमान में सफलता विज्ञान प्रदर्शनी शृंखला के पहले भाग के 55 पोस्टर्स का निर्माण हो चुका है।

4 सफलता विज्ञान शुभकामना संदेश ( **Greeting Card** ) शृंखला - मानवीय संबंधों को निभाने और उनसे लाभ पाने के लिए अपनों को यह अहसास कराते रहना जरूरी होता है कि, हाँ, कोई है, जो करता है... आपसे प्रेम, आपकी परवाह, और रखता है आपके मुख पर मुस्कान देखने की इच्छा। और मित्रो, यह अहसास कराया जा सकता है, शुभकामना-संदेशों के जरिए। अपनत्व की डोर में बंधे हृदय से सृजित हुआ शुभकामना संदेश यह दर्शा देता है कि, संदेश पाने वाला, संदेश देने वाले की नज़रों में कितना विशिष्ट है और संदेश देने वाले के मन में, पाने वाले के लिए कौन सी हार्दिक शुभकामनाएं सदा विद्यमान रहती हैं।

शुभकामना संदेशों के निर्माण के यही उद्देश्य हैं कि, ये संदेश औपचारिकता मात्र न होकर साज-सज्जा, प्रस्तुति व भाषा की दृष्टि से विशिष्ट हों, इनके जरिए न केवल सीधे तौर पर व्यक्ति का व्यक्ति से जुड़ाव और परस्पर प्रेम-मित्रता, अपनत्व-आत्मीयता, बंधुत्व-सहानुभूति आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति व प्रसार हो वरन् उन्हें

प्रसन्नता, उत्साह व जीवन निर्माण की प्रेरणा और मार्गदर्शन भी साथ में प्राप्त हो। इस क्रम में 'सफलता-शुभकामना संदेश', 'जन्मदिवस शुभकामना संदेश', 'विवाह वर्षगांठ शुभकामना संदेश' एवं 'नववर्ष शुभकामना संदेश' की आकर्षक-मनमोहक प्रारंभिक रूपरेखा और नमूना तैयार किया जा चुका है, अब केवल प्रकाशन होना शेष है।

5 सफलता विज्ञान दैनिक सुविचार कलैंडर (Table Calendar) शृंखला - 'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला' की बहुरंगी आकर्षक पुस्तकों के आधार पर, वर्ष के 365 दिनों के लिए उपयोगी सुविचार युक्त वाक्यों को 'सफलता का संसार सुविचार' शीर्षक से वार्षिक टेबल कलैंडर के रूप में प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है। कलैंडर के हर पृष्ठ पर एक तिथी व एक सुविचार अंकित होगा। भविष्य में शृंखलाबद्ध रूप से नए कलैंडरों के प्रकाशन की भी योजना है।

6 सफलता विज्ञान ऑडियो-वीडियो प्रवचन शृंखला - इसके पश्चात, योजना केअगले चरण के रूप में पुस्तकों के आधार पर ही तद् विषयक रुचिकर, सुनने व देखने योग्य 'ऑडियो-वीडियो प्रवचनों' को तैयार करने की योजना है।

7 सफलता विज्ञान मंच प्रस्तुति (Stage Programme) शृंखला - आमजन में ज्ञान को प्रेषित करने के लिए विषय को और अधिक सरल, आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती



है। इसी के दृष्टिगत उद्घोषक, गायक, वादक, लघु नाटिका, चलचित्र आदि साधनों के सामूहिक प्रयोग के माध्यम से सफलताप्रदायक विषय की प्रभावकारी, मनोरंजक मंच प्रस्तुति धारावाहिक रूप से देने की योजना है।

8 सफलता विज्ञान व्यावहारिक प्रशिक्षण (Practical Training) शृंखला - इसके अन्तर्गत विधिवत कक्षाओं के माध्यम से सफलताजन्य सिद्धांतों को जीवन-व्यवहार में उतारने का अभ्यास कराया जाना प्रस्तावित है।

'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला' की पुस्तकों और उन पर आधारित सुविचार पुस्तिकाओं, सफलता विज्ञान चित्र प्रदर्शनियों (Exhibition), सफलता विज्ञान ऑडियो-वीडियो प्रवचनों, सफलता विज्ञान मंच प्रस्तुतियों (Stage Programme) के आधार पर और महाविद्यालय से मूलभूत अनिवार्य ज्ञान को प्राप्त कर, जिज्ञासु, पुरोहित, व्यायाम शिक्षक आदि सेवाभावी जन खुद, निजी स्तर पर अपने-अपने निवास स्थान से, दर्शन योग महाविद्यालय के बाह्य प्रशिक्षक के रूप में व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से इस विषय में देश में ही नहीं अपितु विदेश में प्रशिक्षण कार्य कर विद्वान प्रचारकों की कमी पूरी करने में सहयोग कर सकेंगे, ऐसी आशा है।

9 सफलता विज्ञान सामाजिक मीडिया संदेश सेवा - इसके तहत, भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों को जागरूक करने और इसके आधार

पर अपने जीवन का निर्माण करने में प्रवृत्त करने वाले विचार और जानकारी, भौगोलिक सीमाओं को लांघते हुए विश्व भर में बांटने, साझा करने और उनसे जुड़े रहने के लिए विभिन्न साइट्स आदि साधनों के माध्यम से, जैसे फेसबुक, लिंक्ड इन, ट्विटर, स्काइप, ई-मेल, व्हाट्स एप, सर्च इंजन साइट्स आदि का प्रयोग करते हुए सेवाएं प्रदान करना सम्मिलित है। इसमें इन्टरनेट के माध्यम से ऑनलाइन प्रदर्शनी (online exhibition), अध्ययन गोष्ठी, (online seminar), कार्यशाला (online workshops), वीडियो सम्मेलन (online video conferences), सलाह (online consultancy), प्रशिक्षण (online training) आदि भी सम्मिलित हैं। इस बहु-आयामी प्रकल्प के क्रियान्वयन में 1 करोड़ की राशि का अनुमानित प्रारंभिक व्यय होना है। विद्यालय की अपनी सामर्थ्य व अनुकूलता के अनुरूप ही इस योजना को लागू किया जाना संभव हो सकेगा।

अतः मानव मात्र के कल्याण में रत सभी व्यक्तियों और संस्थाओं से, विनम्र अनुरोध है कि वे परस्पर आगे बढ़ने-बढ़ाने वाली इस कल्याणकारी वैचारिक परियोजना को सफल बनाने हेतु इसमें तन-मन-धन से सम्मिलित होकर सर्व कल्याण में सहयोगी बनकर, पुण्यार्जन का सुअवसर-सौभाग्य प्राप्त करें।

इस परियोजना के लिए खोले गए खाते का विवरण इस प्रकार है:-



खाते का नाम:- सफलता विज्ञान (SAFALTA VIGYAN), बैंक का नाम:-बैंक आफ बड़ोदा, बचत खाता क्र:- ०१७९०१०००१८१६३, आइ एफ एस सी कोड:- BARB0DHANSU, MICR Code: ३८३०१२५०३

व्यावसायिक संस्थानों व कंपनियों से विशेष अनुरोध

कंपनी कानून में प्रावधान है कि कंपनियों को अपने लाभ का 2 प्रतिशत हिस्सा निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व यानी कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिविलिटी (CSR) पर खर्च करना होगा।

सफलता विज्ञान परियोजना सभी व्यावसायिक कौशलों को बढ़ाने के मूलभूत नियमों का परिज्ञान कराने वाली और समाज उत्थान के लिए प्रेरित करने वाली परियोजना होने से सी एस आर के दायरे में आती है। अत: इस परियोजना को लागू कर आप न केवल अपनी सामाजिक वैधानिक जिम्मेदारी का निर्वहन कर समाज का उपकार करेंगे बल्कि भारतीय संस्कृति की रक्षा व विकास कर पुण्यार्जन भी करेंगे। साथ ही, इस परियोजना के प्रभाव से आमजन के मध्य अपनी संस्था व उत्पाद के प्रति विश्वास, सम्मान और साख को भी बढ़ाकर अपने व्यापार की वृद्धि और प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने में समर्थ बनने में सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। अत: इसे सीएसआर के तहत लागू करने का अनुरोध है।

इसी से 'संगच्छध्वं' यानी सबके साथ मिलकर आगे बढ़ने के, ईश्वरीय आदेश का पालन होना भी सुनिश्चित हो सकेगा।